B.A. (Part II) EXAMINATION, 2019

(10+2+3 Pattern) (Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-II

Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern]

हिन्दी साहित्य-I

(रीतिकाल)

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) अरूण गात अति प्रात पदमिनी-प्राणनाथ भय।
मानु हुँ केसवदास कोकनद कोक प्रेममय॥
परिपूरन सिंदूर-पूर कैधौं मंगल घट।
किधौं सक्र को छत्र मद्यो मानिक मयूख-पट॥
कैसोनित-कलित कपाल यह किल का पालिक काल को।
यह ललित लाल कैधों लसत दिग्मामिनि के भाल को॥

अथवा

मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि होय।
जातन की झाईं परैं, स्यामु हरित-दुति होय॥ 1॥
नाचि अचानक ही उठे बिनु पावस बन मोर।
जानत हौं नंदित करी, यह दिसि नंदकिसोर॥ 2॥ 10

(ख) जन तें कुँवर कान्ह गवरी कलानिधान!
कान परी वाके कहूँ, सुजस कहानी सी॥
तबही तें देव देखी देवता सी हँसति सी।
रीझति सी खीझति सी रूठति रिसानी सी॥
छोही ही, छली सी, छीनिलीनी सी छकी सी, छिन,
जकी सी, टँकी सी लगी थकी थहरानी सी।
बीधी सी बँधी सी, विषबूड़ति विमोहित सी।
बैठी बाल बकति बिलोकति बिकानी सी॥

अथवा

भुज भुजगेस की है संगिनी भुजंगिनी-सी।
खेदि खेदि खाती दीह दारून दलन के।
बखतर पाखरन बीच धँसि जाति मीन,

StudentSuvidha.com
downloaded from

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

पैरिपार जात परवाह ज्यों जलन के॥
रैया राय चंपति को छत्रसाल महाराज।
भूषन सकत को बखानि यों बलन के॥
पच्छी परछीने ऐसे परे प्ररछीने वीर।
तेरी बरछीने वर छीने हैं खलन के॥ 10

(ग) भोर तें साँझ लौं कानन और निहारति बावरी नैकु न हारति।
सांझ तें भोर लौं तारनि ताकिबो तारनि सौं इकतारन टारति॥
जो कहुं भावतो डीठि परै धनआनंद आंसुन औसर गारति।
मोहन सोहन जोहन की लगियै रहै आंखिन के उर आरति॥

अथवा

पालन खेलत नन्द ललन छलन बलि,
गोद लैलै ललना करति मोद गान है।
'आलम' सुकवि पल पल मैया पावै सुख
पोषित पियूष सु करत पय पान है।
नंद सों कहत नन्दरानी हो महर! सत,
चंद की सी कलनि बढ़त मोरे जान हैं।
आई देख आनंद सों प्यारे कान्ह आनन में
आनदिन आनछवि, आनदिन आन हैं। 10

(घ) चंचला चमाकैं चई ओरन ते चाइ भरी।
चरजि गई ती फेरि चरजन लागीरी।
कहै 'पद्माकर' लवंगन की लोनी लता।
लरजि गई ती फेरि लरजन लागी री।
उमड़ि घुमंडि घटा घन की घनेरी अबै।
गरजि गई ती फेरि गरजन लागी री।
कैसे धरौं धीर वीर त्रिविध समीर तन।
तरजि गई ती फेरि तरजन लागी री।

अथवा

बानी सों सहित सुबरन मुहँ रहै जहाँ,
घरत बहुत भांति अरथ समाज कौ।
संख्या करि लीजै अलंकार हैं अधिक यामैं,
राखौ मति ऊपर सरस ऐसे साज कौ।
सुनौ महाजन, चोरी होति चारि चरन की,
तातें सेनापति कहै तजि उर लाज कौ।

StudentSuvidha.com
downloaded from

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

लीजियो बचाइ ज्यौ चुरावै नाहिं कोउ सौंपी।
विज की सी थाती में कविजन के व्याज कौ॥ 10

2. केशव की काव्य-कला पर शीर्षक देकर समीक्षात्मक निबन्ध लिखिए।

अथवा

बिहारी सतसई की काव्यगत विशेषताएँ वर्णित कीजिए। 15

3. घनानंद के विरह-वर्णन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

"आलम प्रेमोन्मत्त कवि थे। इनकी रचनाओं में हृदय तत्त्व की प्रधानता है।" इस कथन की सार्थकता प्रमाणित कीजिए। 15

4. देव के काव्य में भाव एवं कला-पक्ष का निरूपण कीजिए।

अथवा

भूषण के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

5. (क) सेनापति का ऋतु वर्णन हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

पद्माकर रीतिकाल के अत्यन्त लोकप्रिय कवि हुए हैं। उनके काव्य की विलक्षणता पर प्रकाश डालिए। 7½

(ख) 'रीतिबद्ध और रीतिमुक्त शृंगारी काव्य' विषय पर टिप्पणी लिखिए।

अथवा

भूषण के काव्य को 'राष्ट्रीय महत्त्व' शीर्षक देकर टिप्पणी लिखिए। 7½

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com